

कर्तव्यं केच प्रज्ञा ÇAT. Br. 2, 2, 3. पुस्तहि प्रज्ञा 3, 7, 1, 27. — 2) *Unterscheidung, Urtheilskraft, Einsicht, Verstand* AK. 1, 1, 4, 10. H. 309. an. 2, 78. MED. n. 2. HALS. 2, 179. ÇAT. Br. 11, 5, 3, 1. 14, 6, 20, 6. PRAÇNOP. 2, 13. ÅÇV. GRH. 3, 5, 9. JOGAS. 1, 20, 48. 2, 27. TATTVAS. 8. M. 4, 41. 42, 52, 94. SUÇR. 1, 126, 18. Spr. 423. प्रज्ञा ददाति चाचार्यः 1803. °वा-  
दश भाषते 266. °गुणशरीर 1833. °वृद्ध 1834. शत्रं निवृत्तिं पुरुषस्य श-  
रीरमेकं प्रज्ञा कुलं च विभवं च पशय कृति 2974. आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञ-  
या सदृशागमः RAGH. 1, 15. कपिले च नास्य प्रज्ञा विलुप्यते KATHA. 37, 111. प्रज्ञया ज्ञायते सर्वम् 49, 144. 32, 173. 38, 15. PRAB. 20, 4. Lot. de la b. l. 342. Am Ende eines adj. comp.: स्त्रीप्रज्ञा ÇAT. Br. 14, 7, 3, 1. अम-  
लप्रज्ञा MÂRK. P. 21, 46. मन्दप्रज्ञ N. 15, 12. पृथु° VJUTP. 34. षु प्रज्ञा-  
स्ति यस्योच्चैः स षट्त्रिंशति स्मृतः TRIK. 3, 1, 16. कृतप्रज्ञ dessen Verstand  
entwickelt ist MBH. 1, 5568. 5, 1246. 12, 5. अकृतप्रज्ञ 13, 5115. BÂIG. P. 1, 13.  
31. अकृतप्रज्ञक MBH. 12, 7183. मतिरगामिका ज्ञेया बुद्धिस्तत्कालदर्शिनी ।  
प्रज्ञा चातीतकालस्य मेधा कालत्रयात्मिका ॥ H. 309, Sch. — 3) *Vorsatz, Entschluss*: तमेव धीरो विज्ञाय प्रज्ञा कुर्वति ब्राह्मणः ÇAT. Br. 14, 7, 3, 23. पथागमप्रज्ञ ÇÂRKH. ÇR. 6, 6. — 4) die personif. *Einsicht* ist Saras-  
vatî ÇANDAR. im ÇKDa. die *Energie des Âdibuddha* BURN. in Lot. de la b. l. 302; vgl. BURN. Intr. 442. — Vgl. पूर्व°; das adj. प्रज्ञा s. u. प्रज्ञ.

प्रज्ञाकर (प्रज्ञा + आकर oder 1. कर) m. N. pr. eines Scholiasten des Nalodaja. — Vgl. प्रज्ञाकर.

प्रज्ञाकाय (प्र° + काय) m. Bein. des Mañgucî TRIK. 1, 1, 21.

प्रज्ञाकूट (प्र° + कूट) m. N. pr. eines Bodhisattva Lot. de la b. l. 158.

प्रज्ञाचक्षुस् (प्र° + चक्षु) adj. bei dem der Verstand die Stelle der Augen vertritt, blind MBH. 1, 147. 582. 2719. 2, 2020. 14, 371. BÂIG. P. 1, 13, 27. m. Bein. des blinden Königs Dhrtarâshtra ÇANDAR. im ÇKDa.

प्रज्ञाद्य (प्रज्ञा + आद्य) m. der *Einsichtsvolle*, N. pr. eines Mannes KATHA. 44, 144. 45, 244. 377.

प्रज्ञातॄ (von 1. ज्ञा mit प्र) nom. ag. der sich zurechtfindet, Auskunft weiss, Wegweiser: प्रज्ञातारो न ज्येष्ठाः सुनीतयः RV. 10, 78, 1.

प्रज्ञाति (wie eben) f. das Sichzurechtfinden, Erkennen des Weges AIT. Br. 2, 1. स्वर्गस्य लोकस्य प्रज्ञात्यै ÇAT. Br. 13, 2, 3, 1. 3, 1. PÂRÂV. Br. 8, 2, 6.

प्रज्ञात्र (aus प्रज्ञात्र) in अप्रज्ञात्रैर् sich verirrrend, fehlgehend: तत्सक-  
लमप्रज्ञात्रं सुवर्गं लोकं न प्रज्ञानीयात् TS. 7, 1, 3, 4.

प्रज्ञादित्य (प्रज्ञा + आ°) m. die Sonne der Einsicht, Bein. eines Man-  
nes RÎGA-TAR. 3, 494.

प्रज्ञान (von 1. ज्ञा mit प्र) 1) adj. a) *verständlich, klug* BUAR. im DVIRUPAK. ÇKDa. — b) *worinnen man sich zurecht findet*: दिशो यश्चेत् प्रज्ञानीः AV. 10, 7, 34. — 2) n. a) *das Sichzurechtfinden, richtiges Erkennen*: लोकानाम् AV. 11, 3, 53. *Erkenntniss, Kenntniss, Wissen* AK. 3, 4, 40, 125. H. an. 3, 389. MED. n. 84. VS. 34, 3. AIT. Up. 5, 2. KATHOP. 2, 24. °घन ÇAT. Br. 14, 7, 3, 13. MÂND. Up. 7. तमेव मुखसे मोक्षं प्रज्ञानं त-  
वास्ति क् MBH. 3, 12693. °तृप्त 13, 3449. बहुप्रज्ञानशालिनी KATHA. 13, 112. 32, 146. वेदं ह्यविरुद्धेन प्रज्ञानेन विकीर्षितम् BÂIG. P. 2, 9, 24. °सं-  
ततिः स्मृतिः TATTVAS. 8. — b) *Erkennungszeichen, Merkzeichen, Merkmal* AK. H. an. MED. Verz. d. Oxf. H. 184, 6, 7. दिशो प्रज्ञानम् (so ist zu le-  
sen) heisst die Sonne. an deren Stand man die Himmelsgegenden un-  
terscheidet, AV. 13, 2, 2. मृताय श्मशानं कुर्वन्ति गृह्णात्वा प्रज्ञानं वा Denk-

mal ÇAT. Br. 13, 8, 4, 1. pl. NIA. 8, 20. नासंपृष्टो क्षुप्युक्ते परार्थे तत्प्रज्ञानं  
प्रथमं पण्डितस्य MBH. 5, 992. धनो रथस्य प्रज्ञानम् R. 2, 67, 26.

प्रज्ञापारमिता s. u. पारमिता.

प्रज्ञामय (von प्रज्ञा) adj. aus Verstand gebildet, in Verstand bestehend:  
एतत्प्रज्ञामयेधीरा निस्तरन्ति मनीषिणः । प्रवेः MBH. 12, 8630.

प्रज्ञाल (wie eben) adj. *verständlich, klug* GAṆA सिध्मादि zu P. 5, 2, 97.  
— Vgl. प्रज्ञिल.

प्रज्ञावत् (wie eben) adj. dass. VJUTP. 78. KATHA. 5, 96. PÂRÂV. 132.  
10. HIT. 52, 12. PRAB. 112, 12.

प्रज्ञावर्मन् (प्र° + व°) m. N. pr. eines Mannes WASSILJEV 268.

प्रज्ञासकृप (प्र° + स°) adj. die Einsicht zum Gefährten habend so v.  
a. *verständlich, klug*: निजं मन्त्रिप्रधानं च पश्चात्प्रज्ञातामहं तयोः । प्रज्ञासकृपं  
व्यसज्जत् KATHA. 42, 84. Wenn nicht mntripradhāna dabei stände, könnte  
man nach der Analogie von धीमत्, धीमचिव die Bed. *Minister* annehmen.

प्रज्ञिन् (von प्रज्ञा) adj. *verständlich, klug* BUAR. im DVIRUPAK. ÇKDa.

प्रज्ञिल (wie eben) adj. dass. GAṆA पिच्छादि zu P. 5, 2, 100. — Vgl. प्रज्ञान.

प्रज्ञु (1. प्र + ज्ञानु) adj. dessen Knie aneinanderstehen, säbelbeinig  
P. 5, 4, 129. AK. 2, 6, 4, 47. H. 436.

प्रज्वलन (von ज्वल् mit प्र) n. das Aufflammen, Auflodern VARAH. BRH.  
S. 96, 10. अमर्षः सापराधेषु चेतःप्रज्वलनं मतम् PRATÎPAR. 53, b, 9.

प्रज्वलित (wie eben) n. das Aufflammen, Lodern, Brennen: वक्त्रिप्र-  
ज्वलिते HARIV. 3293. Belege für die adj. Bed. s. u. ज्वल् mit प्र.

प्रज्वार (von ज्वर् mit प्र) m. Fiebergluth (auch personif.) VJUTP. 220.  
BÂIG. P. 4, 27, 30. 28, 1. 29, 23. 71.

प्रण (von 1. प्र) adj. *ehemalig, alt* P. 5, 1, 30, VÂRT. 3. — Vgl. प्रत्न, पुराण.

प्रणाख (प्र + नाख) Nagelspitze: आ प्रणाखात् KÂND. Up. 1, 6, 6.

प्रणति (von नम् mit प्र) f. Verneigung, Verbengung, ehrfurchtsvolle  
Begrüssung H. 1503. HALS. 4, 64. KAP. 4, 19. °स्थित MBH. 2, 957. प्र-  
स्थानप्रणतिभिः RAGH. 4, 58. निर्जितेषु तरसा तरस्विनां शत्रुषु प्रणतिरेव  
कीर्त्यते 11, 89. 13, 44. 78. Spr. 306. RÎGA-TAR. 3, 77. कृत° 4, 151. 280.  
531. 5, 145. जगत्प्रणतिं च विज्ञोः vor V. BÂIG. P. 1, 16, 17. ते तस्य ग-  
त्वा प्रणतिम् MÂRK. P. 18, 23.

प्रणदन n. = प्रणाद Lois. zu AK. 1, 1, 5, 11.

प्रणपात् (1. प्र + नपात्) m. Urenkel RV. 8, 17, 13.

प्रणय (von 1. नी mit प्र) m. 1) nom. ag. *Führer* P. 3, 1, 142, Sch.  
योतिषाम् NIA. 2, 14. — 2) nom. act. P. 3, 3, 24, Sch. a) *Führung, Lei-  
tung*: राज्यप्रणयकोविद् (अमात्य) MBH. 12, 3934. — b) *ein vertrauliches  
Verhältniss, Vertraulichkeit, Familiarität, Zutraulichkeit, die vertrau-  
liche Annäherung Liebender*: तस्मात्सत्सु विशेषेण सर्वः प्रणयमिच्छति  
Spr. 325 (MBH.). विप्रव्यं कुरु प्रणयम् N. 4, 2. तथा शीलसमाचारे रा-  
जन्मा प्रणये कृयाः MBH. 5, 2688. आमरणान्ताः प्रणयाः (महात्मनाम्)  
Spr. 364. अदो न वाप्रणयिनां प्रणयो विधेयः 346. मैत्री चाप्रणयात्  
(विनश्यति) 1200. नार्हसि त्वं संबन्धिना मे प्रणयं विदुस्तुम् RAGH. 2, 58.  
यदुक्तम् — अज्ञानता मङ्गिमानं तवेमं मया प्रमादात्प्रणयेन वापि BHAG.  
11, 41. प्रणयाडुपकाराद्वा यो विश्वसिति शत्रुषु Spr. 1837. रामायवेदिनं  
सर्वं प्रणयात् so v. a. gerade herans R. 1, 1, 60 (32, 1 liest die Bomb. Ausg.  
विनयात् st. प्रणयात्). 6, 66, 17. 18. यामीत्याह दिवं ब्रह्मन्प्रणयात् BRAHMA-  
P. in LA. 56, 6. °कुपिता MBH. 103. PÂRÂV. 142, 23. 43, 15. अहमपि प्र-